M.A. (Part-II) (Pali & Prakrit) (C.B.C.S. Pattern) Sem-IV

# MAPPCBCS403 - Paper-III : Vinaypitak Va Pali Nibandha

## विनयपिटक व पालि निबंध

P. Pages : 4 **GUG/S/19/10537**

Time : Three Hours Max. Marks : 80

---

सूचना :- 1. सर्व प्रश्नांची उत्तरे लिहिणे आवश्यक आहे.
सभी सवालों के जवाब लिखना अनिवार्य है।
2. स्वीकृत माध्यमातून उत्तरे लिहावीत.
स्विकृत माध्यम में जवाब लिखिए।

**1.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

या पन भिक्खुनी भिक्खुनीं दुट्ठो दोसो अप्पत्तीनो अञ्ञभागियस्स अधिकरणस्स किञ्चिदेसं लेसमतं उपादाय पाराजिकेंन धम्मेन अनुध्दंसेय्य - ''अप्पेव नाम नं इमम्हा ब्रह्मचरिया चावेयं ति। ततो अपरेन समयेन समनुग्गाहीयमानो वा असमनुग्गाहीयमानो वा अग्गभागियं चेव तं अधिकरणं होति कोचिदेसो लेसमत्तो उपादिन्नो, भिक्खुनी च दोसं पतिट्ठाति, संघादिसेसो' ति।।

**किंवा / अथवा**

या पन भिक्खुनी जानं पाराजिकं धम्म अज्झापन्नं भिक्खुनिं नेवत्तना पटिचोदेय्य न गणस्स आरोचेय्य, यदा च सा ठिता वा अस्सचुता वा नासिता वा अवस्सरा वा सा पच्छा एवं वदेय्य 'पुब्बेवाहं, अय्ये, अञ्ञासिं एतं भिक्खुनिं एवरुपा च सा भगिनी ति, नो च खो अत्तना पटिचोदेस्स न गणस्स आरोचेस्सं ति, अयं पि पाराजिका होति असंवासा वज्जपटिच्छादिका'' ति।।

ब) विनयपिटकाला भिक्षुणींचे संविधान का म्हटले आहे. **6**
विनयपिटक को भिक्षुणी का संविधान क्यों कहाँ गया है।

**किंवा / अथवा**

पाली साहित्यात विनयपिटकाचे स्थान व महत्व स्पष्ट करा.
पाली साहित्य में विनयपिटक का स्थान और महत्व स्पष्ट कीजिए।

**2.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

या पन भिक्खुनी अन्वध्दमासं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने एवं वदेय्य - 'इदानेव खो अहं जानामि अयं पि किर धम्मो सुत्तागतो सुत्त परियापन्नो अन्वध्दमासं उद्देसं आगच्छती' ति। तं चे भिक्खुनी अञ्ञे भिक्खुनि जानेय्युं निसिन्न पुब्बं इमिना भिक्खुनींना द्वत्तिक्खत्तुं पातिमोक्खे उद्दिस्समाने को पन वादो भिय्यो, न च तस्सा भिक्खुनीनो अञ्ञाणकेन मुत्ति अत्थि, यं च तत्थ आपत्तिं आपन्नो तं च यथाधम्मो कारेतब्बो, उत्तरिं चस्सा मोहो आरोपेतब्बो' तस्सा ते, आवुसी, अलाभा, तस्सा ते दुल्लध्दं, यं त्वं पातिमोक्खे उद्दिस्समानो न साधुकं अट्ठिं कत्वा मनसि करोसी' ति। इदं तस्मिं मोहनके, पाचित्तियं' ति।।

**किंवा / अथवा**

भिक्खुनी पनेव उद्दिस्स अञ्ञातको गहपति वा गहपतानि वा तन्तवायेहि चीवरं वायापेय्य, तत्थ चेसो भिक्खुनी पुब्बे अप्पवारितो तन्तवाये उपसंकमित्वा चीवरे विकप्पं आपज्जेय्य - 'इदं खो, आवुसो, चीवरं मं उद्दिस्स विय्यति। आयतं च करोथ वित्थतं च अप्पितं च संवितंच। सुप्पवायितं च सुविलेखितं च सुवितच्छितं च करोय। अप्पेव नाम मयं पि आयस्मन्तानं किञ्चिमतं अनुपदज्जेय्यामा' ति।

ब) ''गाब्भिनीवग्गो'' पाचित्तिय धम्माचे वर्णन करा? **6**
''गाब्भिनीवग्गो'' पाचित्तिय, धम्म का वर्णन कीजिए।

**किंवा / अथवा**

भिक्खुणी पाटिदेसनीय धम्माचे स्पष्टीकरण करा.
भिक्खुणी पाटिदेसनीय धम्म का स्पष्टीकरण कीजिए।

**3.** अ) ससंदर्भ भाषांतर करा. **10**
ससंदर्भ अनुवाद कीजिए।

अथ खो भगवा अनुपुब्बेन चरिकं चरमानो येन सावत्थि तदवसरि। तत्र सुदं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति येन भगवा तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो अनाथपिण्डिको गहपति भगवन्तं एतदवोच - ''अधिवासेतु मे, भन्ते भगवा स्वातनाय भत्तं सद्धि भिक्खु सङ्घेना'' ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेना अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति भगवतो अधिवासनं विदित्वा उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि।

**किंवा / अथवा**

अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति राजगहे तं करणीयं तीरेत्वा पेन अनाथपिण्डिको गहपति राजगहे तं करणीयं तीरेत्वा येन सावत्थि तेन पक्कामि। अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति अन्तरामग्गे मनुस्से आणापेसि - ''आरामे, अय्या, करोथ विहारे पतिट्ठापेथ, दानानि पट्ठपेथ। बुध्दो लोके उपन्नो। सो च मया भगवा निमन्तितो इमिना मग्गेन आगच्छिस्सती'' ति। अथ खो ते मनुस्सा अनाथपिण्डिकेन गहपतिना उय्योजिता आरामे अकंसु विहारे पतिपट्ठापेसुं दानानि पट्ठपेसुं। अथ खो अनाथपिण्डिको गहपति सावत्थि गन्त्वा समन्ता सावत्थिं अनुविलोकेसि - ''कत्थ नु खो भगवा विहरेय्य यं अस्स गामतो नेव अविदूरे न उच्चासन्ने गमनागमनसम्पन्नं।

ब) जेतवनाच्या दानाविषयी माहिती लिहा? **6**
जेतवन के दान के बारें में जानकारी लिखिए।

**किंवा / अथवा**

अनाथपिण्डिकाची पब्बज्जा याविषयी माहिती लिहा?
अनाथपिण्डिक की पब्बज्जा इस विषय पर जानकारी लिखिए।

**4.** निबंध लिहा **कोणतेही एक.** **16**
निबंध लिखिए **कोई भी एक।**

1) भगवान बुध्दो

2) चत्तारि अरिय सच्चानि

3) अरिय अट्ठङ्गिको मग्गो

**5.** अ) टिपणे लिहा **कोणतेही दोन.** **6**
टिप्पणियाँ लिखिए **कोई भी दो।**

1) पाटिदेसनीया धम्मा

2) निब्बाण

3) विनयपिटक

4) पाराजिक धम्मा

ब) योग्य पर्याय निवडा. **10**
सही पर्याय चुनिए।

1) जेतवन कोणी दान केले?
जेतवन का दान किसने किया?
1) अजातशत्रु 2) शुध्दोदन
3) सम्राट अशोक 4) अनाथपिंडक

2) भिक्खुणि संघादिसेस धम्म किती प्रकारचे आहे?
भिक्खुणि संघादिसेस धम्म कितने प्रकार के है।
1) पंधरा 2) सतरा
3) अठरा 4) तेरा

3) भिक्खुनिसाठी किती पाराजिक धम्म सांगितले आहे.
भिक्खूनी के लिए कितने पाराजिक धम्म बताए है।
1) आठ 2) सात
3) सहा 4) तेरा

4) पातिमोक्ख म्हणजे काय?
पातिमोक्ख मतलब क्या?
1) ध्यान 2) मैत्री
3) विपस्सना 4) पाक्षिक परिशुध्दी

5) भिक्खुणींचे सेखिय धम्म किती?
भिक्खुणीं के सेखिय धम्म कितने है।
1) बहात्तर 2) तेरा
3) आठ 4) सात

6) भिक्खुणीचे पहिले पाराजिक धम्म कोणते?
भिक्खुणी के प्रथम पाराजिक धम्म कौनसे है।
1) मनुष्य हत्या 2) दोष लपविणे
3) मैथुन 4) चोरी

7) विनयपिटक ग्रंथाचे किती भाग आहेत.
विनयपिटक ग्रंथ के कितने भाग है।
1) 07 2) 03
3) 08 4) 05

8) भिक्षुणीचे पातिमोक्ष किती आहेत?
भिक्षुणी के पातिमोक्ष कितने है?

1) 365 2) 355
3) 315 4) 311

9) पाचित्तिय धम्म किती आहेत.
पाचित्तिय धम्म कितने है।

1) 166 2) 152
3) 142 4) 311

10) अष्टांगिक मार्ग ह्या नावानी ओळखल्या जातो.
अष्टांगीक मार्ग इस नाम से जाना जाता है।

1) अनन्तवाद 2) अरियसञ्च
3) मज्झिम पटिपदा 4) विञ्ञाण

**********